6.

बँगला भाषा के साहित्य का इतिहास

– डॉ. दिनेश श्रीवास *

सेमेस्टर – III, प्रश्नपत्र– IV (भारतीय साहित्य), इकाई 02

बंगला भारोपीय भाषा परिवार की भारतीय–ईरानी शाखा से संबंधित भाषा है। मागधी अपभ्रंश के पूर्वी रूप से बंगला का विकास हुआ है। बंगला पूर्वोत्तर क्षेत्र की भाषाओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रचलित भाषा है। यह बंगाल प्रदेश की राजभाषा तथा बांग्लादेश की राष्ट्रभाषा है। इसके अतिरिक्त यह म्यांमार, वर्मा आदि देशों में बोली जाती है। बंगला भाषा की कई उपशाखाएँ हैं, जिनमें पश्चिमी और पूर्वी शाखाएँ मुख्य हैं। पश्चिमी बंगला भाषा का केंद्र कोलकाता है तथा पूर्वी बंगला का केंद्र ढाका (बांग्लादेश) है। हिंदी के समान बंगला भाषा में संस्कृत शब्दों की भरमार है। मैथिली, बिहारी, असमिया तथा उड़िया भाषा पर इसके भाषागत और साहित्यिक स्वरूप का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। भारत में पाश्चात्य विचारधारा का सर्वप्रथम प्रभाव बंगला साहित्य पर ही दिखाई पड़ता है। बंगला भाषा की अपनी लिपि है।

बंगला भाषा के साहित्य का उदय और विकास –

जनता की चित्तवृत्ति को समझने वाले मनीषियों–संतों की भक्तिपरक वाणियों में बंगला साहित्य के बीज मिलते हैं। हरप्रसाद शास्त्री द्वारा खोजे गए अभिलेख (जिसे उन्होंने नेपाल से प्राप्त किया) भी इस बात की पुष्टि

---

*जन्म : 10 दिसम्बर 1977, बिलासपुर (छ.ग.), माता : श्रीमती आशा देवी, पिता : श्री गणेश श्रीवास, शिक्षा : बी.एस–सी. (गणित), एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल. (हिन्दी), पी–एच.डी. सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक / शोध निदेशक (हिन्दी), श्री. इंजी. विश्वेश्वरैया महाविद्यालय कोरबा, छ.ग., आवास : ए–71, सरगबीन सिटी, बिलासपुर (छ.ग.), मोबा. नं– 7770000030, 7974000000, Email ID: dineshsriwash77@gmail.com

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA
P. G. COLLEGE, KORBA (C. G.)
GOVT. E.V.P.G. COLLEGE KORBA